दुधारू पशुओं का संतुलित आहार

रविरंजन कुमार सिन्हा, रविकान्त निराला एवं कौशेलेन्द्र कुमार

"पशुओं का संतुलित आहार उनके विकास के साथ सर्वोत्तम उत्पादन लेने में सहायक होते हैं। पशुओं में आहार उनके विभिन्न विकास क्रमों, उत्पादन अवस्था, कार्य करने की क्षमता आदि के आधार पर दिया जाना चाहिए। पुनः मिनरल मिक्चर एवं विटामिन के महत्व को समझते हुए आहार संवर्धन करने के उपरांत हम पशुओं के क्रमिक विकास एवं उत्पादन क्षमता बढ़ा सकते है।"

संतुलित आहार से अभिप्रायः उस आहार से है जिसमें हम पशु की आवश्यकता के अनुरूप उसके आहार में सभी तत्वों की उचित मात्रा उपलब्ध कराते हैं। पशु को जीवित रहने, वृद्धि करने, कार्य करने एवं उत्पादन हेतु पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है जिसे हम उचित मात्रा में चारे–दाने के संतुलन से प्राप्त करते हैं।

पशुओं के आहार बनाने के नियम

पशुओं के लिए राशन बनाते समय निम्नांकित बातों को ध्यान में रखें।

(1) आहार के विभिन्न श्रोतों में सभी पोषक तत्वों की जानकारी।

(2) पशुओं के शारीरिक क्रिया, विकास एवं उत्पादन के विभिन्न समयों में विभिन्न पोषक तत्वों की आवश्यकता की जानकारी।

(क) सबसे पहले हम पशु के पोषण हेतु शुष्क तत्व की आवश्यकता ज्ञात करते हैं। दुधारू गाय/भैंस – 2.5–3 कि० ग्रा० /100 कि० ग्रा० शारीरीक भार, तत्पश्चात् हम शुष्क तत्व को चारा एवं दाना में बाँटते हैं। सामान्यतः हम 2/3 चारे से और 1/3 पोषक तत्व दाना से पूर्ति करते हैं। चारे में भी 1/3 भाग हरे चारे से एवं 2/3 भाग सूखे चारे से पोषक तत्व की पूर्ति करते है। यदि दलहनी चारा उपलब्ध है तो कुल चारा का 1/4 भाग हरा एवं 3/4 भाग सूखा चारा खिलाते हैं।

(ख) दाना देने के नियम

सामान्यतः दाने में 16 प्रतिशत प्रोटीन एवं 70 प्रतिशत टी० डी० एन० कम से कम होना चाहिए। दाना मिश्रण में अनाज, अनाज के उत्पाद एवं खल्ली आदि होना चाहिए।

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

साधारणतयाः दाने का उपयोग पशु के जीवित रहने और उत्पादन क्षमता के हिसाब से दिया जाता है। इसलिए बछड़ा, बछिया तथा देशी गाय को 1 कि० ग्रा० प्रतिदिन एवं शंकर गाय, बैल, सॉड एवं भैंस को 1.5 कि० ग्रा० प्रतिदिन मेन्टेनेंस राशन के रूप में दिया जाता है, उसके बाद गायों को हरेक 2.5 लीटर दुग्ध उत्पादन पर 1 कि० ग्रा० और भैसों को हरेक 2 लीटर दुध पर 1 कि० ग्रा० दाना मिश्रण, उत्पादन दाना के रूप में दिया जाना चाहिए।

(ग) अन्य अवस्थाओं का विशेष राशन

गर्भावस्था के 6 माह से 1 कि० ग्रा० दाना गायों को एवं 1.5 कि० ग्रा० दाना भैसों को उपर दिये गए राशन के अलावा देना चाहिए। साथ ही अगर पशुओं से हम कार्य लेते हैं तो बैलों को हल्का कार्य (4 घंटे से कम) के लिये 1 कि० ग्रा०, मध्यम कार्य (4–6 घंटे तक) के लिए 1.5 कि० ग्रा० एवं भारी कार्य (6–8 घंटे तक) के लिए 2 कि० ग्रा० अतिरिक्त राशन के रूप में प्रतिदिन दिया जाना चाहिए।

पशुओं को आहार देने के नियम

(क) पशु का आहार पौष्टिक, मुलायम, रुचिकर एवं स्वच्छ होना चाहिए।

(ख) चारे के डंठल एवं जड़ो कों मशीन से काटकर देना चाहिए, इससे 30–40 प्रति त तक की बचत हो जाती हैं।

(ग) पशु का आहार 8–10 घंटे के अन्तराल पर नियमित देना चाहिए एवं सभी समय स्वच्छ जल उपलब्धता अत्यावश्यक है।

(घ) पशु के आहार में भुसा, हरा चारा, दाना आदि मिलाकर दें। अगर खली दे रहे हों तो उसे भिगों कर दें।

(ड़) चारे को एकदम नही बदलना चाहिए। हरा चारा दुध में वसा की मात्रा बढाता है।

(च) आहार में मिनरल मिक्सर एवं नमक का प्रयोग अनिवार्य रूप से करना चाहिए। प्रतिदिन लगभग 60 ग्राम नमक, 30 ग्राम अस्थिनुर्ज या 60 ग्राम खडिया देनी चाहिए।

(छ) पशुओं के खाने एवं पीने की नाँद साफ–सुथरी होना चाहिए। नया चारा – दाना डालने से पूर्व पहली जूठन को साफ कर अलग कर देना चाहिए।

(ज) कुल आहार पशु के भार के हिसाब से

शुष्क तत्व की मात्रा की गणना के अनुरूप दिया जाना चाहिए।

(झ) आहार को अधिक रूचिकर करने के लिए कभी–कभी पशुओं को गुड अथवा शीरा समुचित मात्रा में खिलाना चाहिए।

गाय–भैसों के लिए आदर्श दिनचर्या

प्रातः 4 बजे से 8 बजे तक–दाना देना एवं सुबह का दुध निकालना

8 बजे से 10 बजे तक–सुखा एवं हरा चारा खिलाना तत्त पश्चात् पानी पिलाना

10 बजे से 2 बजे अपराह्न– प्शुओं को चारा गाह में चराना

2 बजे से 3 बजे तक– पानी पिलाना

3 बजे से 8 बजे तक– दाना देना एवं शाम का दुध निकालना

7 बजे से 8 बजे तक–सुखा एवं हरा चारा खिलाना

रात्रि 8 बजे से 4 बजे सुबह तक– पशुओं को विश्राम

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर यदि हम राशन बनाते हैं और खिलाते हैं तो हमें पशुओं से अधिकतम उत्पादन प्राप्त हो सकता है एवं पशु लंवे समय तक स्वस्थ भी रख सकते हैं।

निष्कर्ष

पशु आहार की गुणवत्ता एवं संतुलन पशुओं से सर्वोत्तम उत्पादन प्राप्त करने में सहायक होते हैं। पुनः बेहतर पशु प्रबंधन एवं दुग्ध दोहन प्रबंधन के द्वारा सर्वोत्तम गुणवत्ता, उत्पादन एवं पशु स्वास्थ्य को भी प्राप्त कर सकते है। उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर यदि हम राशन बनाते हैं और खिलाते हैं तो हमें पशुओं से अधिकतम उत्पादन प्राप्त हो सकता है एवं पशु लंबे समय तक स्वस्थ भी रख सकते हैं।